: प्रथम अध्याय :

गोविंद मिश्र व्यक्तितत्व एवं कृतित्व

प्रथम अध्याय

गोविंद मिश्र : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

1.1	व्यक्तित्व।
1.1.1	जन्म।
1.1.2	माता-पिता।
1.1.3	भाई-बहन।
1.1.4	शिक्षा।
1.1.5	साहित्य के प्रति अनुराग।
1.1.6	नौकरी।
1.1.7	वैवाहिक जीवन।
1.1.8	साहित्यकारों से संपर्क तथा उनका साथ।
1.1.9	प्रेरणा।
1.1.10	रूचि।
1.2	कृतित्व ।
1.2.1	कहानी संग्रह।
1.2.2	उपन्यास।
1.2.3	यात्रा-वृत्तांत।
1.2.4	साहित्यिक निबंध।
1.2.5	बाल-साहित्य।
1.2.6	कविता।
1.2.7	अन्य किताबें।
1.2.8	पुरस्कार एवं सम्मान।
1.2.9	अनुवाद।
	निष्कर्ष

किसी भी रचना को पढ़ने या समझने से पहले उस रचनाकार के जीवन तथा उसकी परिस्थिति को जान लेना आवश्यक है । क्योंकि इमारत कितनी ऊँची है या मजबूत है यह महत्त्वपूर्ण नहीं होता बल्कि उसकी नींव कितनी मजबूत है यह देखना आवश्यक है। रचनाकार के जीवन में आए कई प्रसंग तथा उसके परिवेश का चित्रण उसकी कृतियों में निश्चित दिखाई देता है। इसलिए उसे जानना जरूरी है। रचनाकार का जीवन तथा उसके परिवेश का परिचय पाने के लिए उन सभी कृतियों का अध्ययन करना हमें आवश्यक है जिससे उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व का पता चल सकता है।

1.1 व्यक्तित्व :-

गोविंद मिश्र आधुनिक रचनाकारों में से एक सशक्त रचनाकार हैं। उनकी रचनाओं को समझने से पहले उनके व्यक्तित्व की ओर देखना आवश्यक है।

1.1.1 जन्म :-

"मिश्र जी का जन्म 1 अगस्त, 1939 में अंतर्रा, जिला बांदा (उत्तर प्रदेश) में हुआ। मिश्र जी ब्राह्मण जाती के हैं।"[1] "उनके पूर्वज स्व.श्री.नंदराम (दादा) पहले सिसोलकर गाँव जिला हमीरपुर (उत्तर प्रदेश) में खेती करते थे।[2]"

मिश्र जी के पूर्वज उच्च जाति तथा धर्म से संबंधित थे। मिश्र जी उच्च जाति के होने पर भी उन्हें अपनी जाति पर अभिमान नहीं था। उन्होंने अपने साहित्य में जातिभेद का हमेशा विरोध किया है। अंधश्रध्दा का निवारण करना उनके साहित्य का उद्देश्य रहा है।

1.1.2 माता-पिता :-

मिश्र जी के पिता का नाम श्री.माधव प्रसाद मिश्र तथा माता का नाम सुमित्रादेवी था। मिश्र जी के माता का विवाह 13 वर्ष की आयु में हुआ था। "उन्होंने शादी के बाद अपनी अपूर्ण पढ़ाई पूरी करके नौकरी कर ली। मिश्र जी के माता-पिता की आर्थिक परिस्थिति बहुत ही दारूण थी।"[3] किंतु बाद में मिश्र जी के माता और पिता प्राइमरी स्कूल के अध्यापक बने। उनकी माँ अंतर्रा गाँव बांदा जिले में नौकरी करती थी। वह इलाका बहुत ही पिछड़ा हुआ था फिर भी मिश्र जी की माँ उस जमाने में अकेली रहकर नौकरी करती थी।

अपने माता-पिता की कामकाजी वृत्ति, समझदारी तथा मेहनती रूप गोविंद मिश्र जी में उतरता गया। इसी कारण मिश्र जी आज विख्यात रचनाकार बने हैं।

1.1.3 **भाई-बहन :-**

मिश्र जी को एक बहन और एक भाई है। भाई और बहन का प्रेम उन्हें हमेशा मिलता रहा है।

1.1.4 **शिक्षा :-**

मनुष्य की प्रतिभा का विकास होने के लिए उसे अभ्यास और शिक्षा की आवश्यकता होती है। अत: मिश्र जी के साहित्य का अध्ययन करते समय उनकी प्रारंभिक शिक्षा-दीक्षा के बारे में विचार करना आवश्यक है। मिश्र जी की माता अध्यापिका होने के कारण उनका तबादला चरखारी गाँव में हुआ। इसी कारण मिश्र जी की प्रारंभिक शिक्षा चरखारी गाँव में हुई। चरखारी के गंगासिंह हायस्कूल में आठवें दरजे तक उनकी पढ़ाई हुई। स्वतंत्रता के बाद चरखारी रियासत हमीरपुर जिले में चले जाने के कारण उनके माता का तबादला छिरका गांव में हुआ। छिरका में बच्चों की पढ़ाई की अच्छी सुविधा न होने के कारण वह अपने मायके बांदा में चली आयी। वहाँ के मुंसिपल स्कूल में अपने बच्चों को दाखिल करा दिया। इसी कारण मिश्र जी की बारहवीं तक की पढ़ाई बांदा में ही हो गई और बाकी की पढ़ाई इलाहाबाद में हुई।

मिश्र जी ने अपना उच्च अध्ययन प्रयाग विश्वविद्यालय में पूरा किया। अपनी बी.ए. तक की पढ़ाई तक वे सुंदरलाल होस्टेल प्रयाग में रहे। अंग्रेजी साहित्य, मध्यकालीन इतिहास और संस्कृत साहित्य उनके बी.ए. के विषय थे। बी.ए.में उन्हें प्रथम श्रेणी प्राप्त हुई। आगे अंग्रेजी साहित्य में उन्होंने एम्.ए. की उपाधि प्राप्त की।

मिश्र जी की सारी पढ़ाई उच्च शिक्षा संस्था में होने के कारण उन्होंने वहाँ जो ज्ञान ग्रहण किया वह सारी जिंदगी भर उनके यश की सीढ़ी बन कर उनके साथ रहा है।

प्रत्येक मनुष्य का अपने जीवन का एक आदर्श होता है। कभी-कभी एखाद आदर्श, व्यक्ति को प्रभावित भी करता है। मिश्र जी को भी युवावस्था में स्कूल के अध्यापक श्री.श्याममोहन त्रिवेदी और श्री.देवेंद्र खरे के आदर्श ने प्रभावित किया था।

मिश्र जी के सहपाठी श्री.रमेशचंद्र गुप्त और सहपाठीका सत्या दोनों उनके अंतरंग मित्र थे। उन दोनों का प्रेम तथा बोलने की मिठास के कारण ही मिश्र जी अपने आपको कभी अकेला महसूस नहीं करते थे। चरखारी का परिवेश तथा वहाँ का खांदिया मुहल्ला जहाँ मिश्र रहते थे, उस मुहल्ले के हिंसक वातावरण का वर्णन लाल पीली जमीन उपन्यास में किया है, जिसका उनके मन पर बहुत बुरा असर पड़ा। जिस कारण उनका किशोर मन असंतुलित रहा। उन दोनों सहपाठियों के साथ ने लेखक के मन को उत्साही तथा संतुलित बनाया।

1.1.5 साहित्य के प्रति अनुराग :-

हमें किसी वस्तू अगर व्यक्ति के प्रति अनुराग है, तो हम उसके लिए दिल से काम करते हैं या अपना पूरा वक्त उसे दे देते हैं। इसीलिए किसी भी काम को पूरा करने के लिए हमारे मन में उसके प्रति अनुराग होना चाहिए। मिश्र जी ने अपनी पहली रचना कहानी के रूप में लिखी। तब उनकी आयु 13-14 बरस की थी। इस तरह बांदा में साहित्य के प्रति उनके मन में जो अनुराग पैदा हुआ था वह इलाहाबाद में आकर विकसित हुआ। प्रसिद्ध हस्ती 'फिराख गोरख पुरी' को अपने मित्रों के साथ करीब से देखने का मौका उन्हें मिला। संस्कृत और अंग्रेजी विषय के छात्र होने के बावजूद भी उन दिनों मुशायरों और कवि सम्मेलनों के प्रति आकर्षण से प्राप्त संस्कार या ज्ञान से उनकी भाषा साहित्यिक तथा ओज, प्रसाद और माधुर्य गुणों से परिपूर्ण बनी।

1.1.6 नौकरी :-

मिश्र जी के मेहनती वृत्ति के कारण उनको एम्.ए. में युनिव सिंटी मेरिट लिस्ट में चौथा स्थान मिला। सन 1959 ई. में सेंट ऐड्रूज कॉलेज,गोरखपुर में उन्हें हेड के पद पर नियुक्त किया गया। गोरखपुर में नौकरी करते वक्त आय.ए.एस्. परीक्षा की तैयारी में मन लगाकर मेहनत की और सन 1960 ई. में आय.ए.एस्. के लिए वे चुने गए। भारतीय राजस्व सेवा के सर्वोच्च पद अध्यक्ष, कैंद्रिय प्रत्यक्ष कर बोर्ड तक वे पहुँच गये।

उनकी प्रथम नियुक्ति धनबाद में हुई। वहाँ उन्हें जो अनुभव आए उन अनुभवों को उनके पहले उपन्यास वह अपना चेहरा में और जिहाद जैसी कहानियों में व्यक्त किया हैं। इसी दरम्यान वे कैंद्रिय अनुवाद ब्यूरों के निर्देशक भी रहे हैं।

1.1.7 वैवाहिक जीवन :-

मिश्र जी का विवाह सन 1959 ई. में टीकमगढ़ के श्री. प्रेमनारायण दूबे की दूसरी कन्या शकुंतला जी से संपन्न हुआ। वैवाहिक जीवन में उन्हें चार संतानों की प्राप्ति हुई। जिन में दो संतानों का छोटी उम्र में ही देहांत हुआ।

पुत्र तथा पुत्री के देहांत का सदमा मिश्र जी सहन न कर सके। पुत्र के देहांत का शोक उनकी 'वर्णांजली' कहानी में तथा पुत्री रेखा के देहांत का शोक 'साजिश' कहानी में प्रकट हुआ है। इसी वजह से उनकी कुछ कहानियाँ दिल को रूलानेवाली हैं। मिश्र जी का वैवाहिक जीवन आम आदमी की तरह कुछ दुखी कुछ सुखी रहा है।

1.1.8 साहित्यकारों से संपर्क तथा उनका साथ :-

मिश्र जी भारतीय राजस्व सेवा में अधिकारी होने के कारण उनके तबादले ज्यादा मात्रा में हुआ करते थे। इसी कारण उनकी भेंट महान साहित्यिक विद्वानों से होती रही। वे लिखते हैं कि "सन 1966 ई. में दिल्ली स्थानांतर हुआ तब अज्ञेय जी, जैनेंद्र जी और दिल्ली में रहनेवाले अन्य साहित्यकारों से परिचय हुआ। उसके पहले बिहार के श्री हंसकुमार तिवारी (कवि), श्री फणीश्वरनाथ रेणु से संपर्क का सौभाग्य मिला, राजनीति में किसी विशेष से संपर्क नहीं हुआ।"[4] गोविंद मिश्र का अनेक श्रेष्ठ साहित्यिक विद्वानों से संपर्क रहा है। उनको जानने का सौभाग्य उन्हें मिला। परंतु उन्होंने किसी राजनीति के विशेष व्यक्ति से संपर्क नहीं किया, क्योंकि वे किसी संगठन या गुट से दूर रहना चाहते थे। मिश्र जी किसी भी आंदोलन, वादों में कभी भी जकड़े नहीं। इसके बारे में मिश्र जी लिखते हैं कि, "किसी वाद या आंदोलन से कभी नहीं जुड़ा क्योंकि ऐसा विचार था कि लेखक को अपने निज को पकड़े रहना चाहिए वही संघ या संगठन है, आंदोलन आदि सब भ्रामक चीजें हैं, मुख्य चीज है लिखना सिर्फ लिखना। अत: उन साहित्यकारों से ज्यादा संपर्क रहा जो किसी गुट या वाद के हिमायती नहीं थे – जैनेंद्र, अज्ञेय, रेणु. नागर जी. विष्णु प्रभाकर, निर्मल वर्मा, रविंद्रनाथ त्यागी, शरद जोशी, मन्नू भंडारी, उषा प्रियंवदा आदि।"[5]

मिश्र जी ने अनेक साहित्यकारों का निरीक्षण – परीक्षण करके उनको जाना समझा और अपने लेखन कार्य को अधिक सुचारू तथा व्यवस्थित बनाया है। वे लिखते हैं "सभी साहित्यकारों का साथ रहा नौकरी के सिलसिले में जहाँ भी गया।"[6]

इस तरह गोविंद मिश्र को अनेक साहित्यकारों का संपर्क तथा साथ का मौका उनकी नौकरी के कारण मिला। जिसका प्रभाव उनके साहित्य पर तथा उनके खुद के व्यक्तित्व विकास पर पड़ा।

1.1.9 प्रेरणा :-

हर लेखक को लिखने की प्रेरणा प्रथमत: अपने जीवन से ही मिलती हैं। उनके जीवन में ऐसे कौनसे प्रसंग, परिस्थिति है, जो लेखक को लिखने के लिए बाध्य करते हैं, यह जानना जरूरी है। वैसे तो मिश्र जी उम्र के 13-14 साल से ही लिखते रहे हैं लेकिन सही ढंग तथा दिल से लिखने के लिए कुछ ऐसी घटनाएँ घटी जो प्रेरणा बन गई। मिश्र जी लिखते हैं, "पहले प्रेम की असफलता और दुख ने लिखवाया फिर क्लासवन की नौकरी के मोहभंग ने लिखवाया। लगा कि जीवित रहने के लिए लिखना जरूरी है, स्वयं को प्रकट करने के लिए भीतर इतना दबाव होता था। जीवन को स्वयं समझना है, आस-पास का परिवेश अपने समाज को समझना है जिसके लिए लिखना था"[7]।

इस तरह मिश्र जी को प्रेमभंग, नौकरी, समाज, परिवेश, स्वयं को समझना आदि अनेक घटनाएँ तथा अन्य प्रसंग जो प्रेरणाएँ बनी, जिसके कारण वे आज तक लिख रहे हैं।

1.1.10. रूचि :-

हर आदमी की कुछ रूचियाँ होती हैं। गोविंद मिश्र जी घूमना तथा खेलने में रूचि रखते हैं। मिश्र जी लिखते हैं "सबसे पहले भ्रमण, घूमना जो यात्रा-पुस्तकों में प्रकट हैं, इसके अलावा खेलना और खेलने में हारना, हार स्वीकार करना यह जीवन में खड़ा होना सीखाती हैं"[8]. इस तरह मिश्र जी की रूचि देश-विदेश तथा प्रकृति की गोद में फिरना घूमना है। अत: प्रत्येक खेल में वे रूचि रखते हैं।

इस तरह मिश्र जी एक सर्जनशील रचनाकार के रूप में सामने आते हैं। उनके पास जन्मजात साहित्यिक प्रतिभा है, जिसके बल पर वे अभी तक लिखते रहे हैं। उपर्युक्त व्यक्तित्व के पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए कहा जा सकता है कि, मिश्र जी का व्यक्तित्व, निम्न मध्य वर्गीय परिवार के संस्कारों से युक्त परिपूर्ण व्यक्तित्व रहा है। जीवन से जो सुखद या दुखद अनुभव उन्हें मिले हैं वह अभी तक उनकी लेखन कला की सीढ़ी बने हुए हैं। किसी वाद या गुट से दूर रहकर उन्होंने अपने व्यक्तित्व तथा लेखन कला को उजागर किया है। जिसके परिणामस्वरूप वे सन 1963 ई. से आज तक लगातार सुंदर ढंग से लिख रहे हैं। आज मिश्र जी एक सफल लेखक के रूप में हिंदी साहित्य जगत में या हमारे सामने उपस्थित हैं। माता-पिता, गुरु का आशिष तथा मित्रों का सहयोग और जिंदगी के अनेक अच्छे बुरे अनुभवों ने उन्हें पहले एक व्यक्ति के रूप में खड़ा किया, बाद में वह एक रचनाकार के रूप में हमारे सामने उजागर हुए हैं।

1.2 कृतित्व :-

हिंदी साहित्य में गोविंद मिश्र प्रतिभावान साहित्यकार के रूप में उभरे हैं। उन्होंने एक सशक्त कहानीकार तथा उपन्यासकार के रूप में हिंदी पाठकों के साथ ही हिंदी के सशक्त, सृजनशीलं लेखक तथा समीक्षकों ने भी उनकी रचनाओं को सहारा है तथा मान्यता भी दी है।

आज की भ्रष्ट समाज व्यवस्था, अमानवीयता, आम जनता के सुख-दुख, पीड़ा, शोषण और खुद के अनुभव ही उनके साहित्य का प्रमुख विषय रहा है। समाज का यथार्थ चित्रण उनके साहित्य में दिखाई देता है।

गोविंद मिश्र जी ने अपने साहित्यिक जीवन में विविध साहित्यिक विधाओं पर लेखनी चलाई हैं। मिश्र जी ने साहित्यिक जीवन का आरंभ कहानी लेखन से किया है।

1.2.1 कहानी संग्रह :-

मिश्र जी एक बहुचर्चित कहानीकार हैं। साहित्य के प्रति रूचि होने के कारण उन्होंने लेखन कार्य 13-14 वर्ष की उम्र में ही शुरू किया था। इसी वर्ष उन्होंने दो-तीन कहानियाँ लिखी हैं। जैसे पूरण मासी का भोग, चंदनियाँ अरज करें, जो कॉलेज तथा हॉस्टेल की पत्रिका में छपी थीं। सन 1965 ई. में बालकृष्णा राव द्वारा

संपादित 'माध्यम' इस प्रतिष्ठित पत्रिका में उनका प्रथम कहानी संग्रह 'नए पुराने माँ बाप' प्रकाशित हुआ। मिश्र जी के अब तक प्रकाशित हुए कहानी संग्रह इस प्रकार हैं

	कहानी संग्रह	प्रकाशन वर्ष
1.	नए पुराने माँ बाप	1973
2.	अंत:पुर	1976
3.	घांसू	1978
4.	रगड़ खाती आत्महत्या	1979
5.	मेरी प्रिय कहानियाँ	1980
6.	अपाहिज	1981
7.	खुद के ख़िलाफ	1982
8.	खाक इतिहास	1986
9.	पगला बाबा	1988
10.	आसमान कितना नीला	1992
11.	स्थितियाँ रेखांकित (सन 1960 ई. के बाद हिंदी कहानी संकलन संपादित)	1992
12.	हवाबाज	
13.	अर्थ ओझल (भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा प्रकाशित प्रमुख बीस कहानियों का संग्रह)	
14.	निर्झरणी (दो खंडों में संपूर्ण कहानियों का संकलन)	

मिश्र जी ने अपनी कहानियों मे समाज का वास्तविक चित्रण किया हैं। सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और धार्मिक परिस्थितियाँ उनमें वर्णित हैं। कुछ कहानियाँ रूलानेवाली हैं ,तो कुछ कहानियाँ सुख का एहसास दिलानेवाली हैं। कुछ कहानियाँ हमारी कोमल भावनाओं से संबंधित हैं। इस प्रकार मिश्र जी की कहानियाँ हर क्षेत्र से संबंधित हैं। कहानियों की भाषा, सरल, प्रवाहमय हैं जो आम आदमी के समझ में आती हैं। हर कहानी सामान्य से लेकर उच्च स्तर के व्यक्ति तक संबंधित हैं।

1.2.2 उपन्यास :-

मिश्र जी एक संवेदनशील कहानीकार होने के साथ-साथ यथार्थवादी उपन्यासकार भी है क्योंकि उन्होंने अपने उपन्यास साहित्य में खुद से संबंधित अनुभव को चित्रित किया है। प्रेम जैसे नाजुक तथा भावनिक

प्रसंगों को भी अपने उपन्यासों में स्थान दिया है। अब तक सभी प्रकाशित उपन्यास ख्याति प्राप्त हैं। वे निम्नलिखित हैं -

1.	वह अपना चेहरा	-	1969
2.	उतरती हुई धूप	-	1971
3.	लाल पीली जमीन	-	1976
4.	हुजूर दरबार	-	1981
5.	तुम्हारी रोशनी में	-	1985
6.	धीर समीरे	-	1988
7.	पाँच आँगनोवाला घर	-	1995

इस तरह मिश्र जी के उपर्युक्त सात उपन्यास प्रकाशित हुए हैं। सभी उपन्यास काफी लोकप्रिय हो चुके हैं। कुछ उपन्यास उनके वैयक्तिक अनुभव तथा आप बीती पर आधारीत हैं। इन में से कुछ उपन्यासों ~~को~~ पुरस्कार प्राप्त हुये है।

1.2.3 **यात्रा वृत्तांत :-**

मिश्र जी घुम्मकड़ व्यक्ति हैं। नौकरी के कारण वे ज्यादा घूमें हैं। अपने ही देश की या विदेश की सैर की स्मृतियों को तथा प्रसंगों को यात्रावर्णन के माध्यम से प्रस्तुत किया है। उनके यात्रा वृत्तांत निम्नलिखित हैं -

1.	धूंधभरी सूर्खी	-	1976
2.	दरख्तों के पार ...... शाम	-	1982
3.	झूलती लड़ें	-	1990
4.	पत्तों के बीच	-	1997

मिश्र जी के उपर्युक्त यात्रा वर्णन आज तक प्रकाशित हुए हैं।

1.2.4 **साहित्यिक निबंध :-**

मिश्र जी ने तीन साहित्यिक निबंध लिखे हैं, जिसमें उन्होंने साहित्य के विषय के बारे में अपने विचार प्रकट किए हैं।

1. साहित्यिक संदर्भ
2. कथाभूमि
3. संवाद अनायास

1.2.5 बालसाहित्य :-

बच्चों के मनोरंजन के लिए मिश्र जी ने बाल साहित्य लिखकर बच्चों के मन में अपने लिए जगह बनाई हैं। उन्होंने बच्चों के लिए एक ही रचना लिखी है जो रूचिपूर्ण रही है -

1. कवि घर चोर

1.2.6 कविता :-

गोविंद मिश्र जी ने कविताओं की रचना करके अपने भावुक तथा संवेदनशील मन को पाठकों के सामने रखा है। उनकी कविताओं में प्रकृति का सुंदर वर्णन मिलता हैं। उनका अब तक एक ही कविता संग्रह प्रकाशित हुआ है -

1. ओ प्रकृति माँ

1.2.7 अन्य किताबें :-

1. मुझे घर ले चलो :-

इस किताब में लेखक के द्वारा लिखी सभी विधाओं में स्थित प्रतिनिधि रचनाओं का संकलन हैं।

2. लेखक की जमीन :-

यह मिश्र जी के साक्षात्कारों का संकलन हैं। इस किताब में लेखक के महत्त्वपूर्ण साक्षात्कारों का संकलन हैं। जिसमें उन्होंने अपने कृतियों तथा साहित्य विषयी और अपने जीवन के बारे में विचार प्रकट किए हैं।

1.2.8 पुरस्कार एवं सम्मान :-

गोविंद मिश्र जी को निम्न पुरस्कार प्राप्त हुए हैं -

1. 'लाल पीली जमीन' (क्रम सं.3) श्रेष्ठ लेखन के लिए ऑथर्स गिल्ड ऑफ इंडिया द्वारा सम्मानित।
2. 'हुजूर दरबार' (क्र.सं.4) उत्तर प्रदेश हिंदी प्रतिष्ठान द्वारा प्रेमचंद पुरस्कार से सम्मानित।
3. 'धीर समीरे' (क्र.सं.6) भारतीय भाषा परिषद कलकत्ता द्वारा सम्मानित।
4. भारत सरकार के सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अंतर्गत जर्मनी, वेलस्कोवाकिया और हंगरी की यात्रा है। इस दौरान हाइडबर्ग विश्वविद्यालय को संबोधित किया।

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

5. 'पाँच ऑगनावाला घर' (क्र.सं.7) उपन्यास को के.के.बिडला फाउंडेशन के सन 1998 ई. के व्यास सम्मान से सम्मानित है।
6. कैंब्रिज विश्वविद्यालय में अपनी एक कहानी का पाठ।
7. त्रिनिड़ाड़ और टोबैको में अन्तर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन के लिए भारत के प्रतिनिधि मंड़ल में शामिल ।
8. मौरीशिस की हिंदी प्रचारिणी सभा की स्वर्ण जयंती में भारत का प्रतिनिधित्त्व।
9. **'हुजूर दरबार' मुम्बई विश्वविद्यालय के लिए और 'तुम्हारी रोशनी में'** उपन्यास एस्.एन.डी.टी. विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में सम्मिलित हैं। पूना बोर्ड की 12 वीं कक्षा के लिए नियत हिंदी की पाठ्य पुस्तक में लेखक की एक कहानी शामिल है। मिश्र जी के साहित्यपर कई विश्वविद्यालयों में एम्.फिल्. किया गया हैं।
10. फास और गलत नंबर जैसी कहानियाँ दूरदर्शन पर प्रस्तुत हुई हैं और ख्याति प्राप्त थिएटर ग्रुप अनामिका द्वारा कलकत्ता में पाँच कहानियाँ नाटक के रूप में प्रस्तुत की हैं।
11. निर्झरणी नाम से दो विशाल खंड़ो में लेखक की संपूर्ण कहानियों का संग्रह प्रकाशित हैं।

1.2.9 **अनुवाद :-**

उनके उपन्यास 'तुम्हारी रोशनी में', 'धीर समीरें' गुजराती भाषा में अनूदित और प्रकाशित हुए हैं। विभिन्न कहानियाँ देशी-विदेशी भाषाओं में जैसे अंग्रेजी, बंगाली, पंजाबी, गुजराती और कन्नड़ में अनूदित एवं प्रकाशित हुई हैं। 'अक्षरा' यह पत्रिका मिश्र जी खुद चलाते हैं।

उपर्युक्त प्रकार से मिश्र जी की विशिष्ट उपलब्धियों तथा अनुवाद कार्य पर प्रकाश पड़ा है। जिससे उनका नेतृत्व तथा बहुमूखी प्रतिमा उजागर हुई है। मिश्र जी ने साहित्य के सभी क्षेत्र व्याप्त किए हैं। उनको अनेक पुरस्कार मिले हैं जो एक सफल साहित्यकार की निशानी हैं। दूरदर्शन पर उनकी अनेक कहानियाँ भी प्रसारित हो चुकी हैं। उन्होंने विदेश के कई विश्वविद्यालयों में अपने देश का नेतृत्त्व किया हैं। डॉ.चंद्रकांत बांदिवडेकर के अनुसार "गोविंद मिश्र को सृजनशील साहित्यकार की भाषा प्राप्त है बहुत ही समृद्ध रूप में"।[9]

मिश्र जी का भाषा पर पूरा अधिकार है। इसी कारण 'धीर समीरें' उपन्यास को भाषा परिषद द्वारा पुरस्कृत किया है। डॉ.बांदिवडेकर लिखते हैं - "गोविंद मिश्र जी ने प्राय: हर उपन्यास के लिए नया परिवेश चुना है, नई प्रकृति ओर स्वमाव के लोगों को चरित्रों के रूप में चुना है, नए समूह-मानस को अभिव्यक्त किया"।[10] मिश्र जी ने अपने साहित्य के द्वारा हमेशा जनता को नई स्फूर्ति देने का प्रयत्न किया है। इसी कारण पूरे भारत में रहनेवाले विविध भाषी लोग उनके साहित्य से परिचित हैं।

निष्कर्ष :-

निष्कर्ष के रूप में हम यह कह सकते हैं कि आधुनिक हिंदी साहित्य के प्रतिभा संपन्न बहुआयामी रचनाकार गोविंद मिश्र जी का जन्म अंतर्रा, बांदा जिले (उ.प्र.) में हुआ। आर्थिक परिस्थिति ठीक न होने के कारण माँ और पिता ने अध्यापक की नौकरी की। इसी मेहनती वृत्ति के कारण परिवार का गुजारा होता था। यही मेहनती वृत्ति मिश्र जी में पाई गई है। मिश्र जी ने अपना बचपन तथा प्राथमिक शिक्षा कस्बाई क्षेत्र चरखारी तथा बांदा में रहकर पूरी की। इलाहाबाद में उच्च शिक्षा के लिए आने के कारण सुयोग्य मित्र तथा अनुकूल वातावरण उन्हें मिला। यहीं से उनका एक साहित्यकार के रूप में सफ़र शुरू हुआ।

प्रारंभ में अध्यापक तथा बाद में आय.ए.एस्. अफ़सर की नौकरी में निष्ठा तथा कार्य कुशलता के कारण वे सहराये गए। वे अनुवाद ब्यूरों के निर्देशक भी रहे हैं। मिश्र जी घुम्मकड़ व्यक्ति होने के कारण देश-विदेश की यात्रा की है। यात्रा की स्मृतियाँ उन्होंने अपने यात्रा वर्णन में वर्णित की हैं। खेलना उनकी रूचि होने के कारण वे मानते हैं कि, जीवन में हार ही व्यक्ति को खड़ा होना सीखाती है। जिससे हम हर संघर्ष के लिए तैयार होते हैं।

मिश्र जी का साहित्य सांगोपांग से भरा हैं। समाज के सभी वर्गों पर उन्होंने लेखनी चलाई। इसी कारण मनुष्य की पीड़ा घुटन, कसक, सुख-दुख का यथार्थ चित्रण करने में वे सफल हुए हैं।

मिश्र जी उच्चस्तरीय लेखक हैं क्योंकि उनकी भाषा, रोचक, मधुर प्रवाहशील एवं स्वाभाविक हैं। आज उनका साहित्य सभी क्षेत्रों में दिखाई देता हैं - जैसे दूरदर्शन पर, विश्वविद्यालयों में पाठ्यक्रमों के रूप में तथा अनुवाद क्षेत्र में उन्होंने अपना विशिष्ट योगदान दिया हैं। इसी साहित्य सेवा के कारण उन्हें कई पुरस्कार भी मिले हैं।

गोविंद मिश्र जी आधुनिक लेखकों में से सफल कहानीकार, यथार्थवादी, उपन्यासकार, यात्रावर्णनकार, मनोरंजनकार, बालसाहित्यकार एवं कवि और एक निर्देशक तथा दीपस्तंभ के रूप में दिखाई देते हैं।

संदर्भ-संकेत

1. गोविंद मिश्र के हस्तलिखित से उद्‌धृत, पृ. 1
2. वही पृ. 1
3. वही पृ. 1
4. वही पृ. 3
5. वही पृ. 3
6. वही पृ. 3
7. वही पृ. 3
8. वही पृ. 3
9. डॉ.चंद्रकांत बांदिवडेकर - उपन्यासकार गोविंद मिश्र - एक मूल्यांकन, पृ.3
10. वही, पृ. 4